खण्ड-एक

हिंदी बाल साहित्य

विविध आयाम

संपादक
डॉ. आर.एम. जाधव
डॉ. भगवान जाधव
डॉ. मुकुंद कवडे

Lala Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
फ़ोन : +91 9968084132, +91 7982062594
arpublishingco11@gmail.com

HINDI BAAL SAHITYA : VIVIDH AAYAM-1
Edited by Dr. R. M. Jadhav, Dr. Bhagwan Jadhav, Dr. Mukund Kavde

ISBN : 978-93-94165-22-9
Criticism

© सम्पादकगण

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : 650

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

16. हिंदी कविताओं में बाल-मनोविज्ञान
—डॉ. अनिता कृष्णा भंडारे 94
17. डॉ. परशुराम शुक्ल के बालकाव्य में जीव जगत
—प्रॉ. आनंद र. बक्षी 97
18. हिंदी कहानियों में बाल चित्रण
—डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे 103
19. सोहनलाल द्विवेदी की बाल कविताओं का अनुशीलन
—प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे 109
20. भारतीय बाल साहित्य : स्वरूप एवं अवधारणाएँ
—डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा 113
21. बाल साहित्य में कल्पना और यथार्थ
—डॉ. कुलकर्णी व्ही. बी. 118
22. बाल साहित्य की प्रकृति दशा और दिशाएँ
—प्रा. डा. खेडेकर एम. यु. 123
23. हिंदी बाल साहित्य में जीवन मूल्य
—प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजा भाऊ 129
24. हिंदी बाल साहित्य में प्रकृति पर्यावरण और वन्य जीव
—प्रा. डॉ. भगवान रामकिशन कदम 134
25. बालक की वीरता और धीरता को अभिव्यक्त करने वाला उपन्यास 'एक था छोटा सिपाही'
—प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे 141
26. डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल-साहित्य का पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन
—डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर 147
27. दीनदयाल शर्मा के बालकहानियों में नैतिक मूल्य
—डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ 153
28. बाल साहित्य : परंपरा और आधुनिकता
—डॉ. देविदास भिमराव जाधव 155
29. बाल साहित्य की विकास यात्रा
—नीतू यादव 162
30. साठोत्तरी हिंदी बाल उपन्यास साहित्य
—प्रा. डॉ. शिवसर्जन होनाजी टाले 167
31. बाल-साहित्य की विकास यात्रा
—डॉ. सुभाष सोनाजी जिते 173

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

21 बाल साहित्य में कल्पना और यथार्थ

डॉ. कुलकर्णी व्ही. बी.

बालसाहित्य राष्ट्र की बहुमूल्य संपत्ती है। यह बालकों की रुचि और समझ के अनुकूल लिखा जाता रहा है, जिसमें बालकों का उत्साह तथा जिज्ञासा बनी रहे। आज का बालक ही भावी कर्णधार होगा, इसके लिये जरुरी है कि बाल्यावस्था से ही उसमें सुसंस्कार के बीज डाले जाएं तभी वह कल का सुसंस्कारित, संवेदनशील, सुसभ्य नागरिक बन सकेगा यह कार्य बाल साहित्य के द्वारा ही संभव है। बाल साहित्य बच्चों में आत्मविश्वास तथा आत्मविकास एवं आत्मनिष्ठ का संचार करता है। बाल साहित्य लिखने के लिए सुरदयी और सृजनशील व्यक्ति का होना अत्यावश्यक होता है। बाल साहित्य के लिए बाल मानस तथा मानसशास्त्र का अध्ययन करना जरुरी होता है। हिंदी बालसाहित्य के विशाल उपवन के लिए जमीन तयार करने का काम संस्कृत के पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथो ने किया। पाली भाषा मे रचित जातक कथाए भी इस की आधार भूमि को निर्मित करणे में पीछे न रही। लोकसाहित्य की विशाल संपदा भी इस कार्य मे महत्वपूर्ण सिद्ध हुई, ''कितना मनोरम होता है बाल साहित्य का संसार!''[1] बाल साहित्य की परंपरा संस्कृत के प्राचीन कथा साहित्य की प्रेरणा से प्रारंभ हुई। पंचतंत्र की कहानियों ने बाल साहित्य के लेखकों को बहुत प्रभावित किया। क्योंकि बाल बुद्धी के विकास में मनोरंजनपूर्ण कथाओं की भूमिका होती है। पशु-पक्षी, चांद-सूरज, तारे, वृक्ष, नदिया, देव और दानव के चित्र वाली कहानियों के प्रति सहज मे आकर्षण है। पंचतंत्र हितोपदेश और पौराणिक ऐतिहासिक, कथाओं ने वर्तमान साहित्यकारों को पर्याप्त आधार प्रदान किया, पर संसार परिवर्तनशील है। आए दिन इसमें परिवर्तन होते है, विषय भी समयानुसार बदलते जाते है। आज के इस वैज्ञानिक युग में बालक आधुनिक उपकरणे से जुडा है। हिंदी बाल साहित्य के विकास में बच्चों की रुची मनोवृत्ती एवम वातावरण का पूरा ध्यान रखा गया है। इसी कारण हिंदी बालसाहित्य आज अपने विकास की और अग्रेसर है। बाल साहित्य समृद्ध होने के साथ-साथ भविष्य के लिए उज्वल संभावनाये लिए हुये है, यह विकास के नाना क्षितिजों का संस्पर्श कर रहा है।

बाल साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा : बालक अपने आप में स्वयं सुंदर रचना

Warpudkar (ACS) College, Dist. Parbhani

है, और बालकों को उनके जैसा बनाने में मदद करे। यथार्थ में जो साहित्य बालकों के मन को छू जाये वही बाल साहित्य है।

बाल साहित्य का सरल सा अर्थ है, बालकों के लिए बालकों के नज़रिये से; उन्हीं की भाषा में लिखा गया साहित्य जो कभी-कभी बालकों द्वारा भी लिखा हो सकता है। बाल साहित्य एक शब्द सामासिक पद है जो 'बाल' और 'साहित्य' शब्द से मिलकर बना है। बाल अर्थात बच्चा, नन्हा-मुन्ना बालक।

–संस्कृत हिंदी शब्दकोश के अनुसार, "बालक (वि) बच्चे जैसा, अनजान, बच्चा, बाल, कंकण।"[2]

–हिंदी उर्दू शब्दकोश, तिल्फ (अ) बच्चा, शिशु, लड़का, बालक।"[3]

–साहित्य का कोशगत अर्थ, "अंग्रेजी में साहित्य का रूपांतरित शब्द Literature है। शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, साहित्य(सज्ञा पु. सं.) सहित या साथ होने का भाव एक साथ रहना वांग्मय लिटरेचर।"[4]

–विद्वानों ने साहित्य को विविध प्रकार से परिभाषित किया है।

–डॉ. श्यामसुंदर दास, "साहित्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनंद या चमत्कार की सृष्टी करे।"[5]

–डॉ. नगेद्र, "आत्माभिव्यक्ति ही वह मूल तत्व है जिसके कारण कोई व्यक्ती साहित्यकार और उसकी कृति साहित्य बन पाती है।"[6]

–अनेक विद्वानों ने बाल साहित्य को अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है।

–कवयित्री महादेवी वर्मा, "बालक तो स्वयं एक काव्य है, स्वंय ही साहित्य है।"[7]

–बालकों की प्रिय पत्रिका चंदामामा के संपादक श्री बालशौरी रेड्डी, "बाल साहित्य वह है जो बच्चों के पढ़णे योग्य हो, रोचक हो, उनकी जिज्ञासा की पूर्ती करने वाला हो। उसमे बुनियादी तत्व का चित्रण हो। बच्चों के साहित्य में अनावश्यक वर्णन न हो। कथावस्तु में अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सरल, सहज और समझ में आने वाला हो। सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करने वाला हो।"[8]

इस प्रकार से बाल साहित्य बालकों को ध्यान में रखकर लिखा गया हो, जो उन्हें आनंदातिरेक से भर दे, इसके लिये रचनाकार को चाहिये की बालकों के नजरिये से उनकी अनुभूतियों उमंगों जिज्ञासाओं को उन्ही की वाणी मे कागज पर उतारे।

बाल साहित्य की आवश्यकता : बालसाहित्य बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें आनंद प्रेरणा प्रदान करता है, बालकों का ज्ञानवर्धन करता है, उनकी कल्पनाओं, जिज्ञासाओं का शमन करता है, स्मरण शक्ती में एवं तर्क

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Dist. Parbhani

क्षमता से वृद्धि करता है। बौद्धिकता का विकास करके प्रकर्ति और पर्यावरण प्रेम भी जागृत करता है। बाल रचनाओ के द्वारा बालक अपने चीजों को अपने परिवेश को सामाजिक गतिविधियों को रिश्तो को बारिकि से जानने लगता है। बाल साहित्य बच्चों को अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षित करता है। उनके सामान्य ज्ञान में बढ़ोत्तरी करता है। प्रज्ञा को तीव्र करता है। वही नई वैज्ञानिक तकनिकों से जोड़े रखता है। इस प्रकार से जब तक संसार है तब तक बाल साहित्य की आवश्यकता रहेगी।

बाल साहित्य में कल्पना और यथार्थ : साहित्य वही खरा उतरता है जो कल्पना और यथार्थ का समन्वय करता हो। कल्पना भी यथार्थ के निकट होनी चाहिए। भ्रामक तथ्यों से युक्त कल्पनाएँ रचनाओं को अनुपयोगी बनाती है। बाल साहित्य मे कल्पना का विशेष महत्व है। वास्तव में विज्ञान लेखक मे कोरी कल्पना काम नही आती। तथ्यों पर आधारित कल्पना ने कई बार विलक्षण अविष्कारों को जन्म दिया। युगोस्लाविकिया के विख्यात साहित्यकार कॉरेल चॅपिक ने लिखा, "रोसंप युनिवर्सल रोबोट्स इस नाटक मे सर्वप्रथम मशीन मानव की कल्पना की गई थी। यह एक कल्पना थी, वास्तव मे वह कल्पना यथार्थ हो गई। यथार्थ और कल्पना एक दुसरे के पूरक है।"[9]

कल्पना पर आधारित बालसाहित्य को कल्पना प्रधान बाल साहित्य भी कहा जा सकता है। देव, दानव, परी अनेक मुँह वाले सर्प, मानव के समान बाते करने वाले वन्य जीव, उडणे वाला कालीन जैसे पात्रों और वस्तुओं को लेकर लिखा गया साहित्य इसी श्रेणी में आता है। भारत के साथ ही संपूर्ण विश्व मे साहित्य सृजन के आरंभिक काल मे इसी प्रकार की रचनाये लिखी गई। लोककथाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पंचतंत्र की कहानियाँ, हितोपदेश की कहानियाँ आदि इसी प्रकार का बाल साहित्य है।

इक्कीसवी सदी भूमंडलिकरण और बाजारबाद की सदी है। बाल साहित्य बी बाजार के विस्तार में शामिल है। आज बाल साहित्य नए-नए विषयों को तलाश रहा है। सहज, सरल, सुगम सुस्पष्ट भाषा में बाल साहित्य प्रस्तुत है। इंटरनेट डिजिटल और ई-पुस्तकों के माध्यम से आधुनिक बालसाहित्य, आधुनिक बालकों तक पहुँच बनाए हुए है। बच्चा, स्वभाव से अत्यंत कोमल, सरल जिज्ञासु उत्साह से लबालब, कल्पना के पंख लगाकर आकाश पाताल एक करने वाला तथा इतना मौलिक, विलक्षण संकल्पना वाला जैसा और कोई कभी हो ही नही सकता। बच्चों की चेतना अलौकिक है, विनोद प्रियता और ऊर्जा उसमे स्वतः ही विद्यमान है, और सदैव नवीनताकी और उनमुख उसका बाल मन एक खोजी अन्वेषक की तरह हर समय क्रियाशील एवं सचेत रहता है। साथ ही साथ बालमन संवेदनशील है कि जरा से

आघात से सहम जाता है। विलियम वर्ड्सवर्थ अपने ब बाल्य काल को स्मरण करते हुए लिखते है, "प्रत्येक बालक के पास कल्पना के पंख होते है, अपने जिज्ञासु मन द्वारा वे सोंचने के नये ढंग संजोते है। किंतु उड़ने के पहले ही उनके पंख कुचल दिये जाते है, सृजनशीलता के बीज अंकुरित होने के पहले ही मसल दिये जाते है।"[10] सृनशीलता के इस बीज को प्रस्फुटित होने में बालसाहित्य मदत करता है। बाल साहित्य बालकों की कल्पनाशीलता बढ़ाता है। बालकों के विश्वास और आस्था को सुरक्षा देता है। बच्चों को शिक्षा, जिज्ञासा एवं संस्कार से संपन्न करता है। आज बच्चों को आधुनिक जीवन की मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं का सामना करना पडता है। अतः बाल साहित्य के पठन का प्रचार, प्रसार करना अत्यावश्यक है। बच्चों के विकास के लिए बाल साहित्य की उपयोगिता को झुठलाया नहीं जा सकता। बाल साहित्य बच्चो में ज्ञान-रुचि कल्पना जगाता है। बचपन में जीज्ञासा सर्वाधिक होती है। जिज्ञासा की पूर्ति और कल्पना शक्ती के विकास में सबसे अधिक सहाय्यक साहित्य होता है। पुस्तकों के माध्यम से बच्चा दुनिया देखता है। और अपनी छोटी सी दुनिया के साथ तादात्म्य बिठाता है। बच्चों की मानसिक आवश्यकता की पुर्ति का शक्तिशाली माध्यम अच्छा बाल साहित्य ही है। आस-पास की सुपरीचीत वस्तुओं, पशु-पक्षियों, खिलोनो की कहानियाँ उसे अपने अनुभवों को नये संदर्भो में देखने का अवसर देती है। डॉ. शकुंतला कालरा कहती है, "साहित्य जीवन का परिष्कार और पकड है इस विचार चिंतन मे बच्चों के विकास में बाल साहित्य और उसे रचने वाले साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और रहेगी।"[11] बच्चे नैतिक शिक्षा बिलकुल पसंद नही करते। वे साहित्य के द्वारा केवल मनोरंजन चाहते है। इसीलिये कहा जाता है की बच्चों को नैतिकता की शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से न देकर मनोरंजन की चासणी में लपेट कर देनी चाहिए। नैतिक शिक्षा कडवी गोली की तरह होती है। मनोरंजन की चासणी के साथ बच्चे इसे सरलता से ग्रहण कर लेते है। मनोरंजन में आमतौर पर कल्पना पर जादा ध्यान दिया जाता है। कल्पना ही मनोरंजन का मूल तत्व है। जिसमें मनोरंजन नही वह साहित्य पढ़ा नहीं जाता।

हिंदी शिशु गीतो में बाल कल्पना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। बच्चे कल्पनाशील होते है। वह कल्पना की उड़ान से ऐसे-ऐसे महल तैयार करते है उसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। कल्पनाशीलता बच्चों को प्रसन्न रखती है। और उनकी प्रगती का आधार बनती है बच्चे उनकी रोचक कल्पना शक्ति से कही भी पहुंच सकते है। वो अपनी कल्पना को माँ तक पहुचा कर कहते है :

मम्मी! मेरा मन करता है, पक्षी बन उड़ जाऊ।
बैठ पेड़ पर कोयल जैसा, मीठा गाना गाऊँ।

रोज तितलियों को पकड़ूँ मैं झरनों बीच नहाऊँ।
दिनभर मस्ती करूँ, रात मे सपनो मे खो जाऊँ।"[12]

सारांश : आज के बच्चे कल के नागरिक है, राष्ट्र का भविष्य बच्चों के जीवन शैली से जुड़ा है। जितने अच्छे संस्कार और परिवार बच्चों को मिलेगा समाज उतना ही सुदृढ और सशक्त होगा। साथ ही साहित्य एक सशक्त माध्यम होगा जिसके सहारे हम बच्चों का भविष्य निर्माण कर सकते है। पंचतंत्र हितोपदेश और पौराणिक ऐतिहासिक कथाओं ने वर्तमान साहित्यकारों को पर्याप्त आधार प्रदान किया। आज के इस वैज्ञानिक युग में बालक आधुनिक उपकरणों से जुड़ा है। बाल साहित्य कि उपयोगिता इस बात में है कि वह बालकों को स्वस्थ मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन का अवसर प्रदान करे। बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु बाल साहित्य का उद्देश पूर्ण होना अति आवश्यक है।

बाल साहित्य संस्कृति, समाज, राष्ट्र विश्व बंधुत्व शिक्षा और बच्चों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। बाल साहित्य मे युग के अनुरुप नये विचार और चेतना भी आनी चाहिए। नये जमाने का नया यथार्थ आना चाहिए साथ ही बाल साहित्य मे आधुनिक चेतना के साथ ही बच्चों को पुराने इतिहास की रोचक जानकारी देने वाली ऐतिहासिक कहानियाँ और नाटकों की भी आवश्यकता है। जिससे बाल पाठकों के भीतर वीरता साहस और कुछ बनने की प्रेरणा भी उत्पन्न हो। साथ ही बच्चों के लिए रचनाएँ लिखी जानी चाहिए, जो उन्हें अंधविश्वासों से बचाएँ और प्रगती की राह पर ले जाएँ।

संदर्भ :

1. हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श, उषा यादव व राजकिशोर सिंह, पृ. 180
2. संस्कृत हिंदी शब्द कोश, पृ. 714
3. हिंदी उर्दू शब्द कोश, वेद प्रकाश सोनी, पृ. 146
4. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 825
5. नव आधुनिक हिंदी निबंध, राजेश शर्मा, कपिल शर्मा, पृ. 9
6. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत, डॉ. राजकिशोर सिंह, पृ. 14
7. आजकल, नवंबर 2014, संपादक फरहत परवीन, पृ. 15
8. हिंदी बाल पत्रकारिता उद्भव और विकास, डॉ. सुरेंद्र विक्रम, पृ. 16
9. साक्षात्कार-मासिक अंक 400 सं. देवेंद्र दीपक, अप्रैल 2013, पृ. 33
10. आजकल, संपादक फरहत परवीन, नवम्बर 2014, पृ. 08
11. हिंदी बाल साहित्य विचार और चिंतन, शकुंतला कालरा-नमन प्रकाशन नई दि. 2014, पृ. 9
12. नंदनवन, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृ. 36

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

Principal
Late.Ramesh Warpudkar
Arts, Commerce & Science College
Sonpeth Dist. Parbhani